

नौकरी की किताब
सत्र 2: दिनांक और लेखकत्व
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2, तिथि और लेखकत्व है।

कोई किताब और लेखक नहीं [00:21-1:37]

आइए, अय्यूब की पुस्तक की तारीख और लेखकत्व के बारे में बात करते हुए कुछ क्षण बिताएँ। अब, जब मैं उस पंक्ति का परिचय दे रहा हूँ, हमारे सामने समस्याएँ हैं। हम अक्सर पुस्तक की तारीख और लेखकत्व के बारे में पूछने के लिए बाइबल की विभिन्न पुस्तकों को देखने का प्रयास करते हैं। समस्या यह है: प्राचीन दुनिया में कोई किताबें नहीं हैं, और प्राचीन दुनिया में कोई लेखक नहीं हैं। प्राचीन विश्व बिल्कुल भी हमारी दुनिया जैसा नहीं है। वास्तव में एक लेखक जैसी कोई चीज़ नहीं होती जो किताब लिखता हो। लेखकों के बजाय, हमारे पास बोलने वाले प्राधिकारी व्यक्ति हैं; और हमारे पास लिखने वाले लेखक हैं। और, निस्संदेह, वे किताबें नहीं लिखते। वे दस्तावेज़ लिखते हैं, शायद एक दस्तावेज़ जो मिट्टी की गोली या पपीरस या उस प्रकार की किसी चीज़ पर दर्ज किया गया हो, यहाँ तक कि मोम की गोलियों पर भी। इसलिए, हमारे पास प्राचीन दुनिया में न तो किताबें हैं और न ही लेखक।

श्रवण प्रधान संस्कृति [1:37-2:45]

प्राचीन विश्व श्रवण-प्रधान विश्व है। श्रवण-प्रधान से मेरा तात्पर्य यह है कि वे बोलने और सुनने के माध्यम से अपनी जानकारी प्राप्त करने के आदी हैं। यह उनके लिए सामान्य बात है। वास्तव में, आधिकारिक शब्द इसी तरह आते हैं। उनके लिए बोला गया, सुना हुआ संदेश लिखित पाठ की तुलना में अधिक अधिकार रखता है। यह वैसा नहीं है जैसा हम सोचते हैं। बेशक, आज लेखकों के पास बौद्धिक संपदा है। कॉपीराइट है। प्राचीन विश्व में ऐसा कुछ भी नहीं है। और इसलिए, हमारे पास जो है वह एक बहुत अलग दुनिया है। जब हम लेखकों और किताबों के बारे में पूछना शुरू

करते हैं, तो हम पहले ही बातचीत को उसकी दुनिया में होने के बजाय अपनी दुनिया में धकेल देते हैं जहां वह है।

आधिकारिक आवाज़ [2:45-4:13]

तो, एक अर्थ में, हम गलत प्रश्न पूछ रहे हैं। पुराने नियम की अधिकांश पुस्तकें पुस्तकों के रूप में प्रारंभ नहीं हुईं। बेशक, मुझे यह संशोधन करना होगा कि पुराने नियम में जिन्हें हम किताबें कहते हैं उनमें से अधिकांश अंततः किताबों के रूप में हमारे पास आई हैं, लेकिन वे किताबों के रूप में शुरू नहीं हुईं। वे मौखिक भाषण के रूप में शुरू हुए। वे तब शुरू हुए, उनमें से कुछ दस्तावेजों, व्यक्तिगत खातों, व्यक्तिगत भविष्यवाणियों और दस्तावेजों में व्यक्तिगत भजन के रूप में थे। वे किताब लिखने के लिए बैठे किसी व्यक्ति के साथ शुरुआत नहीं करते हैं। और फिर भी, जो अंततः एक पुस्तक बन जाती है वह अभी भी उन आधिकारिक आंकड़ों से मजबूती से जुड़ी हुई है जिन्होंने उस संचार प्रक्रिया को शुरू किया था। लेकिन कभी-कभी, यह हमारे पास मौजूद पुस्तकों में संकलित होने से पहले सदियों तक प्रसारित होता रहा होगा। फिर भी, किताबें अतीत की उस आधिकारिक आवाज़ को सुरक्षित रखती हैं। इसलिए, किताबें प्रक्रिया के अंत में आती हैं, प्रक्रिया की शुरुआत में नहीं। यह किताब से शुरू नहीं होता। यह किताब के साथ समाप्त होता है।

एक किताब के रूप में नौकरी [4:13-4:55]

ऐसा कहने के बाद, अय्यूब अपवादों में से एक हो सकता है। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि अय्यूब की किताब में बहुत कुछ ऐसा है जिससे ऐसा लगता है कि यह एक साहित्यिक रचना है। अर्थात्, इसे एक संपूर्ण अंश के रूप में एक साथ रखा गया है, न कि केवल एक मित्र के भाषण और दूसरे मित्र के भाषण के रूप में जिन्हें अलग-अलग या कुछ और रखा गया है। ये सभी मिलकर काम करते हैं। तो, ऐसा हो सकता है कि अय्यूब पुराने नियम की कुछ या एकमात्र पुस्तक में से एक है जो वास्तव में एक पुस्तक के रूप में शुरू हुई प्रतीत होती है।

श्रवण प्रधान संस्कृति में लेखन [4:55-6:44]

अब, निःसंदेह, हमारे पास अय्यूब की परंपरा, अय्यूब की कहानी और वह कथा हो सकती है जो पहले मौजूद रही होगी। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम उनमें से कुछ चीजों से निपटेंगे। लेकिन यह

पुस्तक साहित्य का एक अत्यंत रचित नमूना है। और इसलिए, हमें इसे ध्यान में रखना होगा। अब प्राचीन दुनिया में, वे नैतिकता, वाणी और श्रवण से बंधे नहीं थे क्योंकि वे अशिक्षित थे। निश्चित रूप से, लोगों ने संभवतः कम से कम बुनियादी स्तर पर लिखना सीख लिया है। और निःसंदेह ऐसे भी लोग हैं, जो प्रशिक्षण और अपने पेशे के कारण काफी साक्षर थे--खासकर मुंशी। लेकिन प्राचीन दुनिया में लोगों को लिखने की ज़रूरत नहीं थी। उन्हें पढ़ने की ज़रूरत नहीं थी। यह श्रवण-प्रधान संस्कृति थी और इसलिए, संस्कृति में कुछ भी उनके पढ़ने या लिखने पर निर्भर नहीं था। इसका मतलब है कि भले ही उन्होंने इसका थोड़ा सा भी सीखा हो, उन्होंने कभी इसका इस्तेमाल नहीं किया।

यह आज कुछ लोगों की तरह है जो हाई स्कूल में होने पर विदेशी भाषा सीखते हैं, और फिर कभी उसका उपयोग नहीं करते हैं। और जब उन्होंने इसका अध्ययन किया, और हो सकता है कि इससे उन्हें कहीं न कहीं कुछ फायदा होगा, उन्हें यह याद नहीं है। कुछ समय बाद वे इसे खो देते हैं। ऐसा कुछ नहीं है कि वे वास्तव में उस भाषा में काम करने में सक्षम हों। मुझे लगता है कि प्राचीन दुनिया में पढ़ने और लिखने के मामले में यह काफी हद तक ऐसा ही है। वे कुछ बुनियादी काम कर सकते थे, लेकिन समाज और संस्कृति का संचालन पढ़ना-लिखना जानने वाले लोगों पर निर्भर नहीं था। यह केवल कुछ लोगों पर निर्भर था कि वे यह जानते थे कि यह कैसे करना है।

शास्त्रियों की भूमिका [6:44-7:51]

आज हमारे समाज में बहुत से लोगों को कानूनी आवश्यकताओं की बुनियादी समझ है, लेकिन वे वकील नहीं हैं। वे समझते हैं कि यदि उन्हें वास्तव में गंभीरता से कुछ करने की ज़रूरत है, तो उन्हें एक वकील के पास जाना होगा और एक दस्तावेज़ तैयार करना होगा। वे इसे अपने आप नहीं करेंगे। और इसलिए, प्राचीन दुनिया में, उनके पास शास्त्री थे। और जब उन्हें वास्तव में कुछ लिखने की ज़रूरत होती थी, जो हमारे जितना नहीं होता था, तो वे इसे करने के लिए एक लेखक की मदद लेते थे। जो दस्तावेज़ लिखे गए थे वे पहुंच योग्य नहीं थे, भले ही आप इस्राएलियों की कुछ कथा परंपराओं को बाद में लिखने के बजाय पहले लिखे जाने के बारे में सोचते हों। यदि वे होते, तो उन्हें लिख दिया गया होता, और वे अभिलेखीय अभिलेखों में हैं, और वास्तव में उन तक किसी की पहुंच

नहीं है। कोई भी किताब पढ़ने के लिए पुस्तकालय से बाहर नहीं ले जाता। यह उस तरह से काम नहीं करता। इसलिए भले ही वे दस्तावेज़ों में लिखे गए हों, शास्त्री उनकी नकल करके अपना काम कर रहे हैं, इस तरह की चीज़ें।

एक साहित्यिक रचना के रूप में कार्य [7:51-8:44]

तो, यह एक बहुत ही अलग संस्कृति है, और यह श्रवण प्रधान संस्कृति है। अय्यूब की पुस्तक के भाषण अत्यधिक साहित्यिक भाषण हैं। यह हम पर तुरंत प्रहार करता है; ये ऐसी बातें नहीं हैं जिन्हें बहुत से लोग बिना सोचे-समझे बोल सकते हैं। यह अत्यंत पुष्पपूर्ण गद्य और कभी-कभी एक प्रकार की कविता है। लेकिन यह भाषा का एक परिष्कृत स्तर है। संभवतः ऐसे कुछ लोग हैं जो अचानक इस तरह की बातें कर सकते हैं, लेकिन बहुत बार नहीं। और इसलिए, हम अय्यूब की पुस्तक के भाषणों को साहित्यिक रचना के रूप में सोचते हैं। हम बाद में उस मुद्दे पर वापस आएं।

अय्यूब की घटनाएँ [प्रारंभिक]; अय्यूब का लेखन [देर से] [8:44-10:58]

इसलिए, हम वास्तव में लेखकत्व की तारीख और नौकरी की पुस्तक के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। यदि लेखक और पुस्तक वास्तव में प्राचीन दुनिया के लिए उपयोग के लिए बहुत स्वीकार्य लेबल नहीं हैं, तो हम इस बारे में थोड़ा जानना चाहेंगे कि पुस्तक एक साथ कैसे आई। खैर, एक और बात जो हमें समझनी है वह यह है कि हमें यह सोचने की ज़रूरत नहीं है कि किताब उस समय लिखी गई थी जब अय्यूब रहता था। पुस्तक में कुछ संकेतक हैं जो बताते हैं कि अय्यूब अपने आस-पास के समाज के संदर्भ में बाद के नहीं बल्कि पहले के दौर में रहता है। लेकिन किताब में ऐसे संकेत भी हैं कि किताब का साहित्यिक फोकस पहले की बजाय बाद पर है। यह हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि भले ही अय्यूब को बहुत प्रारंभिक काल का व्यक्ति बताया गया हो, इसका मतलब यह नहीं है कि पुस्तक उस प्रारंभिक काल में लिखी गई थी या लिखी गई थी; आइए उस शब्द का उपयोग तटस्थ के रूप में करें, जिसकी रचना उस प्रारंभिक काल में हुई थी। व्यक्ति जल्दी हो सकता है, और रचना देर से हो सकती है। इसलिए, सिर्फ इसलिए कि हम अय्यूब की पुस्तक में कुछ संकेतक देखते हैं कि वह प्रारंभिक समय अवधि से हो सकता है, इसका मतलब यह नहीं है कि पुस्तक एक प्रारंभिक उत्पाद है।

इसलिए, जब हम पुस्तक में विवरण देखते हैं, तो हमें कुछ बहुत छोटी चीज़ें मिलती हैं। उदाहरण के लिए, यह पैसे की एक इकाई के बारे में बात करता है जो कि *केसिता* है और हम केवल पहले के समय में पैसे की उस इकाई के बारे में जानते हैं। यह एक बहुत छोटी चीज़ है, खासकर जब से हम इज़राइल के बाहर की स्थिति से निपट रहे हैं, लेकिन आपके पास यह है। पुस्तक में कलडीन और सबियन जैसे कुछ छापा मारने वाले दलों के बारे में भी बात की गई है। और उस काल के इतिहास पर किए गए कुछ शोधों में, ऐसा लगता है कि यह बाद के समय के बजाय पहले के समय का सुझाव देता है।

अय्यूब एक गैर-इस्राएली है, लेकिन पुस्तक इस्राएलियों के लिए लिखी गई है [10:58-12:43]

कुछ लोगों ने सोचा कि पुस्तक प्रारंभिक होनी चाहिए, अर्थात् मूसा से पहले सिनाई से पहले, क्योंकि इसमें वाचा या कानून या मंदिर का कोई उल्लेख नहीं है। यह सच है। उन बातों का जिक्र नहीं है। इसके अलावा, हम अय्यूब को एक पितृसत्तात्मक पुजारी के रूप में कार्य करते हुए देखते हैं। वह परिवार के लिए एक पुजारी के रूप में कार्य करता है, और यह कुछ लोगों को पहले का मुद्दा लगता है।

लेकिन एक क्षण के लिए पुस्तक पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अय्यूब एक इस्राएली नहीं है। यदि अय्यूब इस्राएली नहीं है, तो हम वाचा या कानून या मंदिर की अपेक्षा नहीं करेंगे। अन्य संस्कृतियों में, और इज़राइल के बाहर के अन्य समाजों में, जनजातीय संस्कृति में पितृसत्ता के लिए पुजारी के रूप में कार्य करना बहुत उपयुक्त होगा। वे चीज़ें वास्तव में हमें तारीख पहचानने में मदद नहीं करतीं। वे हमें केवल यह देखने में मदद करते हैं कि यह कोई इस्राएली नहीं है जिसके साथ हम काम कर रहे हैं। अय्यूब उज़ देश से है। और हम इस बारे में कुछ बात करेंगे कि वह कहां है और यदि हम जानते हैं कि वह कहां है। लेकिन यह एक मजबूत बात है कि वह इस्राइली नहीं है। और यदि वह इस्राएली नहीं है, तो उन विवरणों का वास्तव में कोई मतलब नहीं है।

दूसरी ओर, दिलचस्प बात यह है कि यह पुस्तक इस्राएलियों के लिए लिखी गई है, और हम इसका पता लगा सकते हैं; हम इस पर थोड़ा बाद में, बाद के व्याख्यान में विचार करेंगे। हम उस इज़राइली

रुझान का पता लगा सकते हैं, यहां तक कि उस किताब में भी जो एक गैर-इज़राइली चरित्र पर केंद्रित है।

रचना की तिथि [12:43-13:12]

इसलिए, पुस्तक की रचना की तारीख संभवतः घटनाओं की तारीख से भिन्न है। और इसलिए, हम घटनाओं से पुस्तक की तारीख नहीं बता सकते। यदि यह वास्तव में इस्राएलियों पर केंद्रित पुस्तक है, तो हम उम्मीद करते हैं कि यह पहले के बजाय बाद में होगी। और इसलिए, हम उनमें से कुछ मुद्दों पर गौर करेंगे।

बुद्धि की पुस्तक के रूप में कार्य: स्थायी सत्य [13:12-14:43]

इतना सब कहने के बाद, हमें यह याद रखना होगा कि अय्यूब की पुस्तक एक ज्ञान पुस्तक है। इसका उद्देश्य सिर्फ किसी की कहानी बनना नहीं है। इसका उद्देश्य एक ज्ञान पुस्तक होना है। और ज्ञान साहित्य की प्रकृति ही यह है कि सत्य कालातीत होते हैं। यही बुद्धिमत्ता की बात है कि ये सत्य हैं जिनसे कोई भी, किसी भी समय लाभान्वित हो सकता है। और इसलिए, हमें वास्तव में यह समझना होगा कि अंत में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम इसे मौखिक या लिखित के रूप में सोचते हैं, चाहे हम इसे एक किताब के रूप में सोचते हैं या दस्तावेजों के संकलन के रूप में सोचते हैं, चाहे हम इसे साहित्यिक दृष्टि से सोचते हैं या अलंकारिक शब्दों में, चाहे हम इसे इज़राइली या गैर-इज़राइली के रूप में सोचें, जल्दी या देर से, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हम पुस्तक को उसके ज्ञान शिक्षण के लिए पढ़ रहे हैं। इसमें पुस्तक का अधिकार निहित है। और इसलिए, हम इसी पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं - ज्ञान शिक्षण। और हम तारीख और लेखकत्व के मुद्दे को सुरक्षित रूप से अलग रख सकते हैं क्योंकि इससे किताब पढ़ने के तरीके में कोई फर्क नहीं पड़ता है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2 है: दिनांक और लेखकत्व। [14:43]